Fourteenth Loksabha

Session : 8
Date : 24-08-2006

Participants : Shaheen Shri Abdul Rashid

an>

Title : Need to look into the problems being faced by earth quake hit people in Tangdar and Uri sector of Baramulla district in Kashmir.

श्री अब्दुल रशीद शाहीन (बारामूला) : जनाबे स्पीकर, 8 अक्टूबर, 2005 को बदकिस्मती से फरिश्ता ए अज़ल जमीन पर उतरा और मेरी कांस्टीट्वेंसी के अगले हिस्से में जो तंगदार और उड़ी का इलाका है, वहां बहुत सारे लोगों की जानें तल्ख कर दीं और उनकी जायदाद बर्बाद हो गई। ... (*Interruptions*)

*Not Recorded.

MR. SPEAKER : Only Shri Shaheen's statement is recorded henceforth.

*(Interruptions)**

श्री अब्दुल रशीद शाहीन : मैं उन लोगों की आवाज इस एवान में लाना चाहता था, लेकिन मैदाने जंग में जैसे हालात से गुजरकर हम उस मरहले पर पहुंचे हैं, जहां नादार लोगों की आवाज यहां उठाने का मौका मिला है। जनाबे स्पीकर साहब, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे मौका दिया। मैं आपके होते हुए इस एवान को यह कहना चाहता हूं कि 8 अक्टूबर, 2005 को फरिश्ता ए अज़ल जमीन पर उतरा और मेरे इलाके के तंगदार और उड़ी में बहुत सारे घरों को और बहुत सारी जानों को तलफ कर दिया। अल्लाह का करम यह था कि हमारी तरफ की जानें बख्शी गईं, जायदादें तबाह हो गईं, लेकिन सरहद के उस पार हजारों लोग मर गये, तब भी हमारे इलाके में 567 लोग जांबहक हो गए और तकरीबन 66 हजार घर जिला कुपवाड़ा में और 92 हजार घर जिला बारामूला में तबाह हो गये। उनमें से आठ हजार घर कुपवाड़ा टन्गडार में बिल्कुल बर्बाद हो गये, जिनका नामोनिशान नहीं रहा। कुपवाड़ा में हमारे मुल्क की अगली सरहद है, वहां उन लाचार लोगों को कहीं जाने का कोई मौका नहीं है। अगर आर्मी की छोटी-मोटी मजदूरी नहीं होती, तो ये लोग दाने-दाने के लिए तरसते। मैं अपनी सरकार को मुबारकबाद देता हूं कि जिस वक्त बैनल अक्वामी अदारे ने चाहा कि उन लाचार लोगों के घर बना दें और उनकी जिंदगी को फिर से बसायें, तब हमारी सरकार ने सीना ठोककर कहा कि हां, इस मुल्क की क्षमता है कि हम उनके घर बन सकते हैं और उन्हें फिर से आबाद कर सकते हैं। लेकिन मैं सरकार से यह पूछना चाहता हूं कि एक साल करीब होने वाला है, एक महीना और 15 दिन साल को बाकी हैं, लेकिन अभी तक वे घर नहीं बने हैं और सब जीरो टेंपरेचर में वहां के बच्चे फिर अगली विंटर में बिलखते रहेंगे। मैं इस सरकार को नकारा बताते हुए यह कहना चाहता हूं कि आप उन लोगों की जिम्मेदारी लें, जो हालात के शिकार हो गए या नागहानी आफत के शिकार हो गए। वहां चालीस हजार रूपए की पहली किस्त अदा की गयी, जो उन लोगों ने खर्च करके खत्म कर दी और उनके घर वैसे के वैसे हैं। मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि विंटर सेट होने से पहले इनके लिए फौरी कार्य वाही करें। मैं उन एनजीओज, आप अगर चाहें, तो मैं उनके नाम दे सकता हूं, उन्होंने बरवक्त हमें इमदाद की। जिसमें कुछ बैनल अक्वामी इदारे और मुल्क के इदारे मौजूद हैं, जिन्होंने हमारी फौरी मदद की और उससे हमें आसानी हो गयी। लेकिन सरकार को जो काम करना था, वह सरकार ने नहीं किया। मैं बारामूला के उरी और टन्गडार के उन लोगों की तरफ से, उन बच्चों और औरतों की तरफ से जो फिर माइनस बारह डिग्री सेंटीग्रेड में इस जाड़े में छत से बाहर रहेंगे, मैं सरकार से अपील करता हूं कि खुदा के लिए ऐसे मसाईल न करें और उन्हें उनका हक दें। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपने बहुत अच्छे तरीके से अपनी बात कही है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बड़े दुख की बात है।

...(व्यवधान)